वरुण सागर

चर्चा में क्यों?

राजस्थान **वधिानसभा** अध्यक्ष ने अजमेर स्थति सुप्रसद्धि फॉयसागर झील का नाम परविर्तति कर 'वरुण सागर' कयिा।

मुख्य बदिु

- **मुद्दे के बारे में:**
  - वधिानसभा अध्यक्ष ने कहा कि अजमेर की फायसागर झील का नाम गुलामी का प्रतीक था। यह झील अजमेर के लोगों द्वारा बनाई गई थी और इसमें सधिी सहति सभी समुदायों की धार्मकि व सामाजकि आस्था जुड़ी हुई है।
  - वरुण देवता सधिी समाज सहति अन्य सभी समुदायों के आराध्य देव रहे हैं, इसलयि अब यह झील "वरुण सागर" के नाम से जानी जाएगी।
- **झील के बारे में:**
  - यह झील **अजमेर ज़लि** में स्थति एक कृत्रमि झील है।
  - इस झील का नरि्माण **ब्रटिशि राज** के एक अंग्रेज़ अभयिंता **फॉय** के नरि्देशन में वर्ष 1891-1892 में बाढ़ और अकाल राहत परयिोजना के तहत कयिा गया था।
  - यह राजस्थान की दूसरी अकाल राहत झील है, पहली **राजसमंद झील** है।

राजसमंद झील

- **परचिय**
  - यह राजस्थान का एक लोकप्रयि पर्यटन स्थल है। इसका नरि्माण **17वीं शताब्दी में महाराणा राज सहि** ने करवाया था।
  - इस झील को **राजसमंद झील के नाम से भी जाना जाता है।**
- **नरि्माण:**
  - झील का नरि्माण **1662 में शुरू हुआ** और **1676 में पूरा हुआ।**
  - यह **राजस्थान का सबसे पुराना अकाल राहत कार्य था।**
  - यह झील **गोमती, केलवा और ताली नदयिों पर बनाई गई थी।**
  - इसका **जलग्रहण क्षेत्र लगभग 196 वर्ग मील है।**
- **वशिषताएँ:**
  - यह झील 4 मील लंबी, 1.7 मील चौड़ी और 60 फीट गहरी है।
  - दक्षणिी छोर पर स्थति **सफेद संगमरमर के तटबंध को नौचौकी** कहा जाता है।
  - झील तक जाने वाले घाटों या पत्थर की सीढ़यिों पर मेवाड़ के इतहिास के बारे में शलिालेख अंकति हैं।
  - बाँध के ऊपर स्थति **राज-प्रशस्ति दृश्य में संस्कृत में दुनयिा का सबसे लंबा और सबसे बड़ा पत्थर का शलिालेख है।**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/varun-sagar